



RRB ALP & TECHNICIAN 2024

&

झारखण्ड पुलिस भर्ती



Pilot Batch (CBT- 1&2)

सेवक बैच



HISTORY

दक्षिण भारत के राजवंश

LIVE 16-03-2024 09:00 AM

Part -2



वादामी/वातापी के चालुक्य :- (543-757 AD)

⇒ चालुक्यों की मूल शाखा का उदय वातापी (आधुनिक वादामी) के बीजापुर जनपद

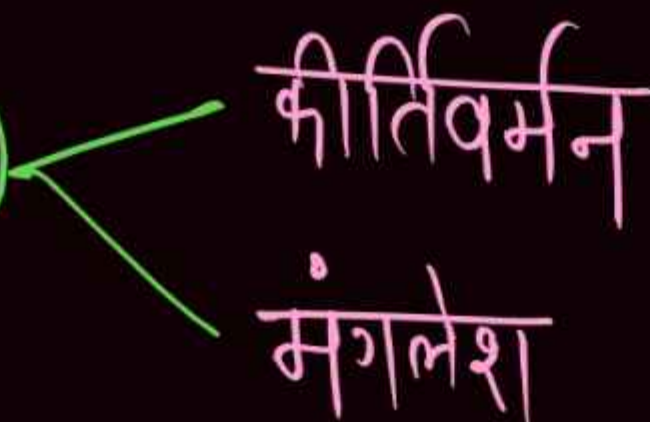
संस्थापक :- पुलकेशिन प्रथम (543-566 AD)

(कर्नाटक) में हुआ

→ शाब्दिक अर्थ :- महानसिंह

उपाधि :- सत्याश्रय, रणविक्रम व पृथ्वीवर्धन

⇒ वादामी में एक दुर्ग का निर्माण करवाया तथा उसी को अपनी राजधानी बनाया।

⇒ पुत्र :- ②  कीर्तिवर्मन
मंगलेश

② कीर्तिवर्मन I - (566-597 AD)

⇒ वनवासी का कदम्ब वंश, कोकण के मौर्य, वैज्जारी-कन्नूल के नलवंशी शासकों को पराजित करके अपने साम्राज्य में मिलाया।
→ अश्वमेध यज्ञ के शासक थे।

③ मंगलेश-1: 597-609 AD

⇒ मंगलेश-1 ने कलचुरी नरेश बुद्धराज को पराजित किया था।

⇒ मंगलेश-1 वैष्णव धर्मानुयायी था, उसने परमभागवत की उपाधि धारण की थी।

⇒ वाकामी के गुहा मंदिर (पिछु को समर्पित) का निर्माण कार्य पूरा करवाया जो कीर्तिवर्मन
द्वारा निर्मित था

(609)

④ पुलकेशिन-II :- (610-642 AD)

⇒ पुलकेशिन I का पौत्र तथा कीर्तिवर्मन का पुत्र पुलकेशिन II चालुक्य वंश का चौथा सर्वाधिक शक्तिशाली एवं प्रसिद्ध शासक था।

उपाधि:- सत्याश्रय, श्री पृथ्वीवल्लभ महाराज

⇒ पुलकेशिन II के विषय में जानकारी रहेल प्रशस्ति लेख मिलती है।

→ रवि कीर्ति

⇒ मैहोल प्रशस्ति में पुलकेशिन II ने नर्मदा नदी (रेवा) के तट पर सम्राट हर्षवर्धन को
पराजित किया है।

⇒ चीनी यात्री ह्वेनसांग 641 AD में पुलकेशिन-II के समय वातापी आया था।

⇒ पुलकेशिन II को पल्लव नरेश नरसिंहवर्मन 1 ने पराजित करके युद्ध में मार डाला।

⇒ पिक्रमादित्य :- 655-680 AD

⇒ विनयादित्य :- 680-696 AD

⇒ विजयादित्य :- 696-733 AD

⇒ पिक्रमादित्य-II :- 733-746 AD

⇒ कीर्तिवर्मन II :- 746-757 (अन्तिम शासक)

रचना एवं रचनाकार :

⇒ ऋतुसंहारम्, मेघदूतम्, कुमारसंभवम्, रघुवंशम्, मालविकाग्निमित्रम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्

⇒ मुद्राराक्षस, देवीचन्द्रगुप्तम् → विशाखादत्त

⇒ काव्यदर्पण, दशकुमारचरित → दण्डिन

→ किराताजुनीय → भारवि

— कालीदास

⇒ चारुदत्त — भास

⇒ यौगाचारः — अंसग

⇒ मृच्छकटिकम् → शुभ्रक

→ चरकसंहिता : चरक

→ कामसूत्र : वात्स्यायन

→ नीतिशास्त्र → कामदं

⇒ पंचतंत्र :- विष्णुशर्मा

⇒ बृहत्संहिता, पंचसिद्धान्तिका :- वराहमिहिर

⇒ प्रहमसिद्धान्त — आर्यभट्ट

→ विशुद्धिमग्ग :- बुद्धधोष